विषय सागर से पार क्षीण सागर में जाना
बाप आया नैया को पार ले जाने बन खवैया
बना बनाया अनादि ड्रामा है, हम जानते
सब अपना -अपना पार्ट बजाते
तो किसी भी पार्ट धारी के दोष नही निकालने
84 का चक्र पूरा हुआ घर जाना
भक्ति होगी फिर से , नर्क से अब स्वर्ग आना
ड्रामा के राज़ को समझ कोई की निंदा नही करनी
सेवा जो निस्वार्थ नही, डिस्टर्ब करती, नही करनी
सेवा को बोझ नही समझना
स्वार्थ से न्यारे सम्बन्ध में प्यारे हो सेवा करना
श्रेष्ठ शुभ वायब्रेशन से नेगटिव को पोजीटिव में बदलना

मेरा बाबा
ॐ शांति।।